Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

DEU

व्यवस्थाविवरण

परमेश्वर ने सबसे पहले सीनै में मूसा को इस्राएल की राष्ट्रीय "व्यवस्था" को प्रकट किया (निर्ग 20–23)। महान अगुवा मूसा अब मरने वाले थे। परमेश्वर ने एक युवा पुरुष, यहोशू को मूसा का स्थान लेने के लिए नियुक्त किया था, लेकिन उसका परीक्षण अभी तक पूरा नहीं हुआ था। इस्राएल को मिस्र में गुलामी से बचा लिया गया था और जंगल में चालीस वर्षों के दौरान सामर्थ्य के कार्यों के द्वारा संरक्षित किया गया था। इस्राएली अब उस देश में प्रवेश करने की कगार पर खड़े थे जिसका उनसे वादा किया गया था, लेकिन वह शक्तिशाली और विरोधी शत्रुओं का निवासस्थान था। हालाँकि परमेश्वर अतीत में विश्वासयोग्य रहे थे, लेकिन भविष्य अनिश्चित प्रतीत हो रहा था। व्यवस्थाविवरण परमेश्वर के साथ बंधी इस्राएल की वाचा के नवीनीकरण का विवरण है- ऐसी वाचा जो इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में उनके इतिहास के शेष भाग में परमेश्वर के आशीषों की ओर मार्गदर्शन करेगी।

पृष्ठभूमि

मिस्र से निर्गमन के चालीस वर्षों बाद, इस्राएली मोआब के मैदानों में पहुंचे, जो यरीहो से यरदन नदी के पार था। चार दशकों तक भटकने के बाद, परमेश्वर के अब्राहम से किए गए वादों की पूर्ति के लिए वे यरदन पार करने, कनानी देशों पर विजय प्राप्त करने, और उनके देश में बसने के लिए तैयार थे। हालांकि, पहले परमेश्वर उनके साथ अपनी वाचा को नया रूप देंगे।

मूसा को पता था कि वह अपने लोगों को उनके गंतव्य तक ले जाने से पहले ही मर जाएंगे। इसलिए, अपनी मृत्यु से पहले, उन्हें लोगों को उस वाचा की शर्तों की याद दिलाने की आवश्यकता थी जो परमेश्वर ने उन्हें प्रकट की थी। प्रारंभिक वाचा जो इस्राएल के लिए, कनान के मार्ग के दौरान उपयुक्त था वो अड़तीस वर्ष पहले सीनै में बांधा गया था (निर्ग 19–24)। अब, इस्राएल के एक बसे हुए समुदाय के रूप में स्थापना की आशा करते हुए, मूल वाचा को दोहराना और विस्तार करना आवश्यक था। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक यह दोहराव है।

सारांश

व्यवस्थाविवरण इस्राएल के गोत्रों को मूसा का विदाई का संबोधन है। इस पुस्तक में वृतांत, उपदेश, चेतावनियां, निर्देश और इस्राएल की विश्वासयोग्यता के संदर्भ में आशीषों या श्रापों के वादे शामिल हैं। व्यवस्थाविवरण एक संधि लेख के रूप में रचित है, जिसमें राष्ट्रों के बीच की वाचाओं के सामान्य सिद्धांतों का उपयोग किया गया है। यह प्राचीन निकट पूर्वी स्रोतों, विशेषकर हित्ती अभिलेखों से ज्ञात अन्य संधियों के समान है। इस प्रकार मूसा इस्राएल को परमेश्वर के उद्देश्यों का संचार एक सामान्य साहित्यिक और कानूनी रूप में करता है।

व्यवस्थाविवरण की औपचारिक संरचना पुस्तक की धार्मिक प्रकृति के बारे में एक बहुत बड़ी अंतर्दृष्टि देती है। एक वाचा लेख के रूप में, यह परमेश्वर के वादों और इस्राएल के (वाचा के साझेदार के रूप में) संधि की शर्तों का पालन करने की गंभीरता को रेखांकित करता है ताकि परमेश्वर अपने वादों को पूरा कर सके। एक विदाई के भाषण के रूप में, यह ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि में निहित है।

निम्नलिखित रूपरेखा एक वाचा दस्तावेज़ के रूप में व्यवस्थाविवरण के विश्लेषण को दर्शाती है:

- 1:1–5 वाचा की प्रस्तावना
- 1:6–4:49 ऐतिहासिक परिचय
- 5:1–26:15 वाचा की शर्तें
- 26:16–29:1 आज्ञाकारिता के लिए आशीष और अवज्ञा के लिए श्राप
- 29:2–30:20 वाचा की समीक्षा और जीवन और मृत्यु के बीच चुनाव
- 31:1–29 वाचा के लेख को सौंपना
- 31:30–32:43 वाचा के गवाह

बाइबल के लेख में निहित रूपरेखा व्यवस्थाविवरण की संरचना को एक वाचा लेख के रूप में और उपदेशों की एक श्रृंखला में संप्रेषित एक विदाई के भाषण के रूप में दर्शाती है।

लेखकत्व

लंबे समय से चली आ रही यहूदी और मसीही मान्यताओं के अनुसार मूसा ने व्यवस्थाविवरण को लिखा था। पुराना नियम और नया नियम दोनों ही मूसा की इस पुस्तक की लेखकत्व को स्वीकार करते हैं (1 रा 2:3; 2 रा 14:6; 2 इति 25:4; एज्रा 3:2; मत्ती 19:7; मर 12:19; लूका 20:28; प्रेरि 10:2–23; रोम 10:19; 1 कुरि 9:9)।

हालांकि, पिछले दो सौ वर्षों के दौरान, आलोचनात्मक विद्वानों ने इस बात से इनकार किया है कि मूसा ने व्यवस्थाविवरण को लिखा था। कुछ विद्वान व्यवस्थाविवरण की पहचान राजा योशिय्याह के समय (लगभग 621 ई. पू.; 2 रा 22:8–20) में मंदिर में पाए गई पुस्तक के रूप में करते हैं और तर्क देते हैं कि व्यवस्थाविवरण की तिथि उस समय के आसपास की होनी चाहिए। कुछ संपादकीय वृद्धियों को बँधुआई के समय के बाद (538 ईसा पूर्व और उसके बाद) का भी मानते हैं।

पुरातत्त्वविदों ने मूसा के समय के आसपास के, कांस्य युग के अंत (1500–1200 ई. पू.) में उत्पन्न हुई हित्ती संधि ग्रंथों की खोज की है। ये ग्रन्थ जिनमें व्यवस्थाविवरण से कई समानताएं हैं, इस पुस्तक के पूर्वकालीन लेखन को समर्थन प्रदान करते हैं। कुछ विद्वान व्यवस्थाविवरण की तुलना सातवीं शताब्दी के अश्शूर संधि ग्रंथों से करते हैं जो योशिय्याह के समय के अधिक समीप हैं। हालांकि, हित्ती ग्रंथ संरचना और विषयवस्तु में अश्शूर के उदाहरणों की तुलना में व्यवस्थाविवरण से अधिक समानता रखते हैं, जिससे यह संभावना कम हो जाती है कि व्यवस्थाविवरण बाद के समय में लिखा गया था।

संक्षेप में, यह पारंपरिक दृष्टिकोण कि मूसा ने पुस्तक का अधिकांश भाग लिखा है, एक उचित निष्कर्ष है। कुछ संपादकीय वृद्धियों को बाद में शामिल किया गया (जैसे, मूसा की मृत्यु का विवरण; 34:5–12)। आगे उत्पत्ति पुस्तक का परिचय, "लेखकत्व" देखें।

साहित्यिक रूप

व्यवस्थाविवरण की संरचना निर्गमन और कनान पर विजय के समय में विभिन्न देशों के बीच की गई अन्य संधियों के लेखों के समान है। इनमें से कुछ संधियाँ बराबर वालों के बीच थीं, जबकि अन्य अधिपति-सामंत संधियाँ थीं। एक अधिपति-सामंत संधि में, श्रेष्ठ पक्ष (अधिपति, या "महाराज") अपने अधीन लोगों (सामंतों) की शर्तरहित आज्ञाकारिता के बदले में मांगें और वादे करता था।

व्यवस्थाविवरण परमेश्वर और इस्राएल के बीच की एक अधिपति-सामंत संधि है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र के दासत्व से निकालकर अपनी सेवक प्रजा बनने के लिए बुलाया। उन्होंने इस संबंध में अगुवाई की, संधि को बनाए रखने के लिए शर्तों को निर्धारित किया, और यदि इस्राएल आज्ञा का पालन करेगा तो आशीष देने और राष्ट्र के द्वारा अवज्ञा करने पर दण्ड देने के वादे किए।

मूसा का अधिपति-सामंत संधि प्रारूप का उपयोग करना यह स्पष्ट करता है कि व्यवस्थाविवरण एक वाचा का लेख है। परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोग होने के लिए चुना। वाचा ने उन्हें विशेष लोग नहीं बनाया, क्योंकि निर्गमन के पहले ही वे परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचाने जा चुके थे (निर्ग 4:22–23)। बल्कि, वाचा का लेख उनके आचरण को नियंत्रित करता है। इस्राएलियों की इस पीढ़ी के साथ वाचा दोहराकर मूसा ने यह सुनिश्चित किया कि वे परमेश्वर के वाचाबद्ध लोगों के रूप में प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करेंगे।

अर्थ और संदेश

वाचा व्यवस्थाविवरण का प्रमुख विषय है - और शायद पूरे पुराने नियम का भी। वाचा ने प्रभु को स्वयं को इस्राएल के साथ एकजुट करने का माध्यम प्रदान किया। वाचा में कहा गया था कि प्रभु इस्राएल के परमेश्वर थे, इस्राएल परमेश्वर के लोग थे, और उनके बीच का संबंध परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्यों को पूरा करेगा। इस अद्भुत विशेषाधिकार में गहरी जिम्मेदारी भी शामिल थी। क्या इस्राएल अपना आचरण इस प्रकार का कर सकता था जिससे उनके उद्देश्य की सफलता निश्चित हो जाए? आचरण के कौन से मानक उन्हें अपनी बुलाहट को पूरा करने में सक्षम बनाएंगे?

इस्राएल को परमेश्वर की वाचा को स्वीकार करने या अस्वीकार करने की स्वतंत्रता थी (निर्ग 19:7–8)। एक बार जब उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, तो वाचा में उल्लिखित आशीषों और श्रापों का वितरण इस बात पर निर्भर करता था कि उन्होंने आज्ञा का पालन किया या अवज्ञा की (28:1–6, 15–19)। यद्यपि अवज्ञा से भी उभरा जा सकता था यदि राष्ट्र मन फिराए, वापस लौटे, और वाचा की संगति में पुनः स्थापित हो जाए (30:1–10; लैव्य 26:40–45 भी देखें)।

इस वाचा ने इस्राएल को परमेश्वर के चुने हुए लोग नहीं बनाया; परमेश्वर का अब्राहम को एक राष्ट्र को संतान के रूप में देने की प्रतिज्ञा पहले ही उन्हें यह बना चुकी थी (उत 17:1–8)। सीनै में बांधी गई वाचा ने इस्राएल को याजकों के राज्य के रूप में प्रभु की सेवा का विशेषाधिकार प्रदान किया (निर्ग 19:4–6)। व्यवस्थाविवरण उस वाचा की शर्तों को दोहराता है: यदि इस्राएल “याजकों के राज्य और [परमेश्वर की] पवित्र जाति" के रूप में अपनी भूमिका में विश्वासयोग्य बना रह सकता है तो यह परमेश्वर के आशीषों को पूरी दुनिया तक पहुँचाएगा।

इस्राएली परमेश्वर के विशेष लोग थे। परमेश्वर ने देश के पितरों से वादे किए थे जिन्हें उन्होंने निर्गमन में और राष्ट्र के निर्माण में पूरा किया। वह प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय प्राप्त करने में इस्राएल को दृढ़ करने के लिए और अपने उद्देश्यों के पूरा होने तक राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए तैयार थे। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक ने विश्वासयोग्य जीवन और सेवकाई के सिद्धांतों की स्थापना की है जो उन उद्देश्यों को

अर्थ और संदेश

प्राप्त करने में इस्राएल के परमेश्वर के साथ जारी संबंध को सुनिश्चित करेगें। इस्राएल को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ साझेदारी करके उनकी युगों से चली आ रही योजना को पूरा करने का अविश्वसनीय सम्मान प्राप्त हुआ।